Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 07/04/2020 Accepted on : 20/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

मृदुला सिन्हा की दृष्टि में आधुनिक भारतीय स्त्री

दीपा मद्धेशिया
शोध छात्रा (हिंदी)
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर उ.प्र.

सारांशः आज आधुनिक युग में स्त्रीवादी चिन्तन व मनन आन्दोलनों के माध्यम से स्त्रियों के अन्दर सामाजिक जागरुकता एवं जीवन जीने के क्षेत्र मे महती विकास हुआ है, प्राचीन समय से लेकर आज तक स्त्रियों की दशा एवं दिशा में विभिन्न अन्तर देखा जा सकता है। बदलते हुए संस्कृति एवं सामाजिक दृष्टि से स्त्रियों की बदलती हुई भूमिका का गंभीर विवेचन एवं विश्लेषण समझने का मदद प्राप्त हुआ है, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्त्री अपनी पुरानी दकियानुसी बातों को छोड़कर आगे बढ़ रही है, वह पुरानी रुढियो एवं परम्परागत बेड़ियों को तोड़कर अब आगे बढ़ना चाहती है और यह सब स्त्री लेखन एवं स्त्री विमर्श के द्वारा ही सम्भव हो पा रहा है। आधुनिक युग में स्त्री परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़कर अब आगे बढ़ना चाहती है, स्वतंत्रता सबके लिए जीने की नवीन शक्ति यदि न प्रदान कर सके, तो वह एक साधन मात्र बनकर रह जाती है। आधुनिक युग सभी के लिए समान रुप से उत्थान का युग रहा है, और यह उत्थान सभी के अन्तर – मन पर क्रान्तिकारी परिवर्तन के रुप में उभरकर सामने आया है। यह निर्विवाद सत्य है कि हमारा भारतीय समाज पुरुष प्रधान रहा है और युगो–युगो से स्त्रियां परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई कठिन एवं अवसादपूर्ण जीवन व्यतीत करतीं आ रहीं हैं। साहित्य के क्षेत्र में भी विभिन्न लेखको एवं लेखिकाओं ने भारतीय स्त्री की ऐसी छवि को दर्शाया है, जो सदैव दूसरो के अधीन रहकर या कष्ट सहकर अपनी जीवन के मुश्किल से मुश्किल समय में डटकर संघर्षो के बीच जीवन व्यतीत करतीं है।

मुख्य बिन्दूः श्रीमती मृदुला सिन्हा, वर्तमान परिवेश, आधुनिक, भारतीय स्त्री.

१ प्रस्तावना :

"ऊँ जयंती मंगता काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा छमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।"

प्रस्तुत श्लोक के माध्यम से श्रीमती मृदुला सिन्हा जी ने वर्तमान सामाजिक परिवेश को देखते हुए, जिसमें स्त्रियों द्वारा पुरुषों के समकक्ष या पुरुष जैसा बनने की होड़ की लालसा रखने वाली महिलाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से यह सन्देश देने का प्रयत्न किया है कि स्त्री और पुरुष के बीच कोई भेद रेखा नहीं है, स्त्री एवं पुरुष की सहभागीदारी अपेक्षित है, न कि उसे अपनी बराबरी करने की। इसी सन्दर्भ में श्री अटल बिहारी बाजपेई जी ने ठीक ही कहा है कि –**"समानता के नाम पर जो नारी को पुरुष बनाने पर तुले है, वे उपहास के पात्र हैं, नारी को नारी ही रहना है। सिर्फ देखना यह है कि हाड़मांस की बनी यह नारी न कठपुतली बनकर जिए, न उड़नपरी बनकर देश की धरती से नाता तोड़ ले।"** महान विचारक एवं चिन्तको की बातों से स्पष्ट होता है कि आधुनिक स्त्री देश एवं समाज के महत्व को समझे, वह यह समझे की वह कोई साधारण स्त्री नहीं है, अपितु विशेष है। इसी सन्दर्भ मे श्रीमती मृदुला सिन्हा जी ने आज की आधुनिक स्त्री का वर्णन प्रस्तुत किया है। वह समाज एवं राष्ट्र के लिए एक उदाहरण स्वरुप हैं। जिसमें वह पुरुषों के समकक्ष न होकर उनसे कही ऊपर एवं श्रेष्ठ हैं। वह जननी है जो दूसरो के विषय में चिन्तन मनन करती है।

वैदिक कालीन स्त्रियों की तेजस्विता, शौर्य, धैर्य, साहस, विद्वता, व्यवहारिकता की गौरव गाथा तो सबने सुनीं है। आज आधुनिक स्त्री भी शौर्य, गौरव, साहस एवं विद्वता में कम नहीं है। वह श्रेष्ठ है, घर, समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं पर विचार एवं तर्क करने की शक्ति है उसमे , फिर वह क्यों ये नहीं समझती कि ईश्वर ने उन्हें विशेष प्रशिक्षण देकर भेजा है। वह अबला नहीं अपितु सबला हैं। वह घर एवं बाहर के कार्यो को भली-भाँति करना जानती है, किन्तु पुरुषों से मुकाबला करना, उनके जैसा दिखना यह उनके लिए सर्वथा अनुचित है। वह घर की लक्ष्मी है, पूरे घर की बागडोंर उनके हाथों में है।

२ मृदुला सिन्हा का जीवन परिचय :

श्रीमती मृदुला सिन्हा का जन्म 27 नवम्बर 1942 ग्राम छपरा जिला मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ था। वे एक सुविख्यात लेखिका के साथ–साथ भारतीय जनता पार्टी की कार्यसमिति की सदस्य भी है। मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेने के उपरान्त भी इनके माता-पिता ने इनके परवरिश में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी, अपने गाँव के प्रथम शिक्षित पिता की यह अंतिम सन्तान थी, महज आठ वर्ष की अवस्था में ही इनके पिता ने इन्हे पढ़ने के लिए छात्रावास भेज दिया, यही पर इनकी आरम्भिक शिक्षा की शुरुआत हुई, मनोविज्ञान से एम0ए0 करने के उपरान्त बी0एड0 किया और मुजफ्फरपुर के कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुईं। कुछ समय के उपरान्त मोतिहारी के एक विद्यालय में प्रिंसिपल के पद पर भी रहीं, किन्तु उनका मन वहा भी न लगा, और अन्ततः उन्होने नौकरी को सदा के लिए अलविदा

कह दिया। और हिन्दी क्षेत्र मे उन्होने पदार्पण किया, और सदैव हिन्दी साहित्य की सेवा में उन्होने अपने आप को समर्पित कर दिया। सन् 1959 में उनका विवाह डॉ रामकृपाल सिन्हा (जो उस समय अंग्रेजी के प्रवक्ता थे।) से हुआ। 16 वर्ष की आयु में ससुराल पहुंचकर बैलगाड़ी की यात्रा की, 1971 में पति के मंत्री बनने के साथ ही मृदुला जी ने भी साहित्य के साथ-साथ राजनीति की सेवा शुरु कर दी, और वर्तमान समय में भी वह बिना रुके राजनीति से जुड़ी हुई हैं।

३ वर्तमान परिवेश एवं स्त्री :

एक प्रसिद्ध लेखिका का कथन है कि **"हमारी निराशा का सबसे बड़ा कारक यह है कि ईश्वर कि, यानि जगत सृष्टा की जैसी भी परिकल्पना हमारे भीतर जमी हुई है, उसके साथ-साथ इस बेसुरी, बेढ़ंगी दुनिया का ताल-मेंल हम किसी तरह नहीं बिठा पाते। आखिर क्यों जरुरी है कि हम सृष्टिकर्ता की ऐसी मर्दानी छवि गढ़े ?, क्यों नहीं हम इस सृष्टि को सिरजाने और पालने वाली शक्ति की कल्पाना एक स्त्री के रुप में कर पाते ?, और अगर हम ऐसा कर पाये तो इस ब्रह्माण्ड के नियमों को कहीं बेहतर समझ सकेंगे और तब हमारी दुनिया भी हमें इतनी बेतुकी और व्यर्थ नहीं लगेगी।"**

ठीक ऐसी ही विचारधारा श्रीमती मृदुला सिन्हा जी की भी है, वे कहती है – **"हर विकासशील सदी के विकास में स्त्री और पुरुषों की सहभागीदारी अपेक्षित होती है। स्त्री और पुरुष का युगानुकूल विकास होता है, बाहर और भीतर भी पिछले कई सदियों में समाज में "तू औरत की ज्योति बहन री, मै घर का पहरेवाला" की स्थिति रही है।"**

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो आजकल की स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में (जल, थल, नभ) में अपना परचम लहरा चुकी है, कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं रह गया, वह चहुंओर अपनी छटा बिखेर रही है। धरती, आकाश, पाताल सबको वह नाप लेना चाहती है, और हो भी क्यों न प्राचीन समय से लेकर स्वतंत्रता के कुछ दशक पश्चात् तक स्त्रियां परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुईं थीं, आज उनके साथ पुरा समाज एकजुट होकर उनका समर्थन कर रहा है, किन्तु यह क्या?,आज स्त्रियां इतनी स्वतंत्र हो गईं है कि वह पुरुषों से अपनी बराबरी करने लगीं, पुरुषों की तरह बनने की होड़ में वह अपना मूल्य, संस्कार, रीति-रिवाज सब कुछ ताख पर रख देने के लिए तैयार हैं, क्या आज हमारी प्रतिस्पर्धा सिर्फ इसमें है कि हम पुरुषों से किस तरह मुकाबला करें, क्या यह सच है कि पुरुष अत्याचारी होते हैं, सहयोगी नहीं? क्या जो पुरुष कर रहे हैं स्त्री को भी वैसा ही करना चाहिए?, क्या आज प्रत्येक घर अखाड़ा बन गया है?, बराबरी के नाम पर स्त्रियों को पुरुष बनना है, क्या स्त्रियां विशेष नहीं हैं?, क्या स्त्रियों की समस्याएं सिर्फ स्त्रियों की ही समस्याएं है?, पुरुष वर्ग का उनसे कुछ लेना-देना नहीं है?

आज वर्तमान समय में स्त्रियों को मुकाबला नहीं, बल्कि उन्हे अपने नैतिक कर्तव्यों से अवगत होना चाहिए। अपने मूल्यों का निर्वहन करना चाहिए, कि वह बराबर नहीं, बल्कि विशेष हैं। सबसे अलग, वह जननी हैं। प्रत्येक क्षेत्र में वह पुरुषों के बराबर नहीं, बल्कि उससे कही अधिक ऊपर है। आज स्त्रियों व पुरुषों को बराबर नहीं समझना चाहिए, बल्कि को स्त्रियों विशेष संरक्षण, विशेष सुरक्षा, विशेष आरक्षण प्रदान करना चाहिए। परिवार समाज की एक सबसे छोटी ईकाई है, और परिवार में यदि स्त्री न हो, तो परिवार, परिवार नहीं रह जाता, हर परिवार के केन्द्र में स्त्री है, जो अपने मातृत्व के स्नेह से पूरे परिवार को एकसूत्रता के बन्धन में बांधे रहती है।

अत: वर्तमान परिवेश मे स्त्री का एक प्रमुख स्थान है, विशेष स्थान है। हर साल हम दुर्गापूजा, लक्ष्मीपूजा, कालीपूजा का आयोजन करते हैं, दुर्गा के रुप में, लक्ष्मी के रुप में, काली के रुप में हम एक स्त्री की ही पूजा अर्चना करते है। अत: स्त्री एवं पुरुष में कोई मुकाबला हो ही नहीं सकता। इनके अनुसार नारी को मात्र पुरुष की छाया मान लेना अभिशाप है। स्त्री एवं पुरुष रथ के पहिए के समान है जिसमें एक के अभाव में दूसरा महत्वहीन है, ठीक उसी प्रकार दोनो (पुरुषों एवं स्त्री) के समन्वय के बिना घर-परिवार, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता है। प्रचीन काल से ही स्त्री पुरुषों की मंगल कामना के लिए व्रत रखतीं रही है, बहन- भाई के लिए, पत्नी –पति के लिए, माँ – बेटे के लिए किन्तु कभी ये सुनने नही आया कि एक पुरुष भी स्त्री के लिए, भाई – बहन के लिए, पति – पत्नी के लिए, बेटा-माँ के लिए व्रत रखता हो।

मृदुला सिन्हा जी के शब्दो में –**"स्त्री-पुरुष की बराबरी की होड़, प्रदूषित मानसिकता का घोतक है-हम ही क्यों करें करवा चौथ?, पुरुष क्यों नहीं? हम क्यों पहने चूड़िया और सिन्दूर, पुरुष क्यों नही ?"** हमारे वर्तमान परिवेश में जिसमें नारी उपर्युक्त वस्तुओं की मांग कर रही है, वह सर्वथा अनुचित है, किन्तु यह अपेक्षा अवश्य की है कि **"महिलाओं द्वारा किए गए व्रत एवं उपवास का पुरुष वर्ग महत्व समझे एवं पुरुष अपनी छमता एवं सामर्थ्य अनुसार उसमें सहयोग प्रदान करें, न की उनको नीचा दिखाएं एवं मूल्यों एवं धर्म के प्रति कोई सन्देह व्यक्त न करें।"** आज स्त्रियां प्रत्येक कार्य को करने के लिए स्वतंत्र हैं और हो भी क्यों न? उन्हें तो इस समाज में पुरुषों की बराबरी करनी है, उनके समकक्ष रहना है, किन्तु वे यह नहीं जानतीं की स्त्रियां पुरुषों से विशेष हैं, उनका अधिकार प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। स्त्रियां हर क्षेत्र में अपना योगदान कर रहीं है। पर उन्हे इस बात को समझना होगा कि वे पुरुषों से मुकाबला न कर अपने महत्व को समझे, अपनी मातृत्व की भावना को पहचाने, नहीं तो बराबरी के होड़ में वह अपनी विशेष पहचान एवं विशेष प्रतिभा का स्वत: ही गला घोट देंगी।

४ मृदुला सिन्हा की दृष्टि से आधुनिक भारतीय स्त्री :

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक महिलाओं के रहन-सहन, जीवन जीने के तरीके, लोक-व्यवहार, शिक्षा-दिक्षा आदि में अन्तर देखा जा सकता है और यह अन्तर सम्भवत: सही नहीं है, क्योंकि समय के साथ सब बदलते है, परिवर्तन ही संसार का नियम है किन्तु समय के साथ-साथ अपने आप को बदलने से पहले हमें यह अच्छी तहर सोच समझ लेना चाहिए कि यह बदलाव हमारे एवं हमारे परिवार, समाज के लिए कहा तक उपयोगी सिद्ध होगा। श्रीमती मृदुला सिन्हा जी ने अपने विभिन्न पुस्तकों, लेखों, उपन्यासों के द्वारा

पाठको को यह समझाने का प्रयास करती रहीं है कि " बेटियों विशेष हैं।" वह पुरुषों के बराबर नहीं। वे कहती है कि **–"बेटा-बेटी को मात्र बराबर नहीं बेटी को विशेष मानकर शिक्षा, संस्कार, सुरक्षा सुविधाएं मुहैया कराने की जरूरत है। तभी परिवार एवं समाज में मात्र बराबर नहीं विशेष प्रकार के विकास के अवसर पाकर वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति भी विशेष सतर्क होंगी।"** आशय स्पष्ट है कि लेखिका आधुनिक नारी को "विशेष" शब्द से सम्बोधित करती हैं। आधुनिक भारतीय नारी प्रत्येक सन्दर्भ में इस समाज में विशेष है, वह अपने महत्व को जबतक नहीं समझेंगी, तब तक हमारे समाज का कल्याण होने वाला नहीं है। अपनी पुस्तक **'मात्र देह नहीं है औरत'** में वह लिखती है कि **–"एक बार सामाजिक सम्मेलन में मैने महिलाओं द्वारा नारा लगाते हुए सुना कि –हम भारत की नारी हैं, फूल नहीं चिनगारी हैं।"** वे लिखती है मैं 1980 में राजनीतिक दल के महिला संगठन से जुड़ी तब मैने इस नारे पर विचार किया की नारे में बोलती महिलाओं द्वारा स्पष्ट था, कि वे चिनगारी है। आशय स्पष्ट है कि अब महिलाएं फूल बनकर रहना नहीं चाहती, बल्कि वह अब विरोध करना सीख गई है। किन्तु उनका यह विरोध क्या सार्थक है? इस विरोध के द्वारा क्या वह अपनी आधुनिक पहचान बना सकतीं है? महिलाएं अगर विरोध पर आ जाए तो, उनका इस स्वरुप का क्या होगा जिस स्वरुप में वह दुर्गा, सरस्वती, सीता, सावित्री या माता के रुप में पूजी जाती है। सम्भवत: वह चिनगारी नही बल्कि फूल है क्योंकि यह फूल रुप ही उन्हे पुरुष से श्रेष्ठ बनाता है। किन्तु इसके विपरित वह अपने फूल स्वरुप की रक्षा करने के लिए चिनगारी बन सकतीं हैं किन्तु थोड़े समय के लिए। फिर उन्होने इसमे (नारें) बदलाव किया और एक नया स्वरुप इस नारें का सामने आया। **"हम भारत की नारी हैं, फूल और चिनगारी है।"**

जीवन के किसी भी क्षेत्र में अतिशयता वर्जित है कहा भी गया है कि - **"अति सर्वत्र वर्जयते"** कहना न होगा कि लगभग दो सौ सालो के इतिहास को जब हम उठाकर देखते है तो उसमें भी स्त्रियों के साथ अति हुई है। मृदुला जी कहती है कि **–"नारी के विकास की दृष्टि से समाज के लिए मुगलकाल और उसके बाद भी अंधकार युग रहा और महिलाएं असूर्यपश्या कहलाने लगीं, जो सूर्य ही नहीं देख पाती थी।"** किन्तु समय बदला, परिस्थिति बदली और समाज की सोच बदली 21वीं सदी तक आते- आते महिलाओं को वह सब कुछ प्राप्त हुआ जिसकी वह हकदार थीं, बेटियों को लेकर माता-पिता की सोच भी बदलने लगी अब बेटियों के जन्मोत्सव पर भी बधाई के गीत गाये जाते हैं उन्हे भी समाज मे उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर भेजा जाने लगा। आधुनिक काल मे माता-पिता अपने बेटियों को भी विदेश भेजने लगे ताकि वह वहा जाकर अपने संस्कार, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के द्वारा अपना तथा भारतवर्ष का नाम रोशन कर सकें। वहा के लोगो को अपने भारत की मिट्टी से अवगत करा सकें और गर्व से कह सकें कि हम भारत की स्त्रिया हैं।

आधुनिक स्त्रियों की पहचान इसमें है कि वह अपने द्वारा प्राप्त संस्कृति एवं सभ्यता का आदर्श प्रस्तुत करे, न कि पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता को अपनाएं। आज महिलाएँ आधुनिक बननें के चक्कर में अपनें आप का प्रदर्शन कर रही हैं, टी0 वी0 एवं विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं में यह भरा पड़ा है, जिसमें वह अपने अंग-प्रत्यंग को दिखाने के लिए लालायित होती देखी जा सकतीं हैं। मृदुला जी ऐसी नारियों को देखकर दु:खी होतीं हैं एवं कहती हैं कि **–"सुबह-सुबह समाचार-पत्र के पृष्ठो पर अर्द्धनग्न महिलाओं की तस्वीरें देखकर मन में सवाल उठता है कि आखिर इन्हे ऐसी तस्वीरे छापने की आवश्यकता क्यों पड़ गई? टी0वी0 के अधिकांश चैनलो पर अर्द्धनग्न और अब पूर्ण नग्न युवतियों की तस्वीरे देखकर टी0वी0 देखना बन्द करना पड़ता है। अब स्थिति यह हो गई है कि परिवार के साथ बैठकर टी0वी0 नहीं देखा जा सकता। समाचार-पत्र और पत्रिकाओं को ड्राइग-रुम के सेन्ट्रल टेबल पर नहीं रखा जा सकता।"** क्या यही हमारा आदर्श है, यही हम भारतीय स्त्रिया हैं, जिनकी तुलना सीता, सति, सावित्री से की जाती है, इस आधुनिकता के विकास के दौर में हम अपना सर्वस्व नाश करते चले जा रहे है। हम अपने अंगो को दिखाकर समाज में क्या हासिल करना चाहते है। हमें यह समझना चाहिए की हमारी अस्मिता अपने शरीर को दिखाने से नहीं बल्कि उन्हे ढककर इज्जत से सम्भालने की है। ग्रामीण महिलाओं को अक्सर यह कहते हुए सुना जाता है कि - **"दरवाजे पर कैसे जाती मरद लोग बैठे थे! मेरी साड़ी इतनी फटी थी कि इज्जत भी नही ढकी जा सकती।"** हमें आधुनिक बनना है सोच से, विचारों से, अपने मूल्यों से न अंगो का प्रदर्शन करके।

हम जानते है कि आधुनिक स्त्रिया प्रत्येक स्थानों में पुरुष के समान बढ-चढ कर हिस्सा लेती हुई दिख रही है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि पहनावे में, रहन सहन में वह बराबरी करें, यह उचित नहीं है क्योंकि वह विशेष है पुरुष के समान नहीं। आज माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वह अपनी बेटियों को इस योग्य बनाए कि वह अपने नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें। वह यह बता सकें कि हम भारत की बेटी हैं। हममें समता, समानता, सहनशीलता की कमी नहीं, जरुरत पड़ने पर हम लक्ष्मी भी बन सकते है एवं काली का स्वरुप भी धारण कर सकते हैं। स्त्रिया को यह नहीं भूलना चाहिए कि **"जननी का जनमने , जनमी को जीने, जीवन देते रहना का, सम समता–सम्मान चाहिए, नारी को पहचान चाहिए।"** उन्हे यह याद होना चाहिए, कि वह एक माँ हैं, मातृत्व सुख से बड़ा इस संसार में दूसरा कोई सुख नहीं है। स्त्रियों को किसी भी दबाव मे आकर कन्या भ्रूण हत्या में भागीदार नहीं होना चाहिए और उन्होने यदि एक बच्चे को जन्म दे भी दिया तो उसे (बच्चे को, बेटी/बेटा) मातृत्व स्नेह एवं मातृत्व दूध से वंचित कर देती है। हमें यह समझना चाहिए कि यही विशेष ब्रह्मा के समान है। क्योंकि ब्रह्मा भी जनते है और स्त्रिया भी जननी हैं। इसलिए वर्तमान परिवेश में स्त्रियों को यह ध्यान रहना चाहिए कि इस सृष्टि के विस्तार में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान परिवेश विसंगतियों का परिवेश रहा है यहा नाना प्रकार के लोग है किन्तु सबकी दृष्टि स्त्रियों पर ही आकर थम सी जाती है। स्त्रियों के कई स्वरुप है कहीं बेटी के रुप में, कहीं पत्नी के रुप में कही माँ के स्वरुप में कहीं वह सेविका है तो कहीं घर चलाने वाली एक कुशल गृहिणी भी, कही घर एवं दफ्तर दोनो को सम्भालती हुई एक विरांगना, तो कही आकाश तक इसने अपने पैर पसारे है। चहुंदिक इन्हे मान-सम्मान की ही प्राप्ति हुई है। अत: इन भारतीय आधुनिक स्त्रियों को यह समझना चाहिए कि वह विशेष हैं, उनका सम्मान अंग-प्रदर्शन या पुरुषो के समतुल्य पहनावे में ना होकर उनके नैतिक मूल्यों, संस्कार-संस्कृति, परिवेश, वैचारिक सोच एवं मानसिक आजादी में है।

५ निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से हमने देखा कि श्रीमती मृदुला सिन्हा की दृष्टि से आधुनिक भारतीय स्त्री, स्त्री नहीं अपितु वह मातृत्व की शक्ति है, विशेष है, आधुनिक समय में परिवर्तन के साथ-साथ स्त्रियों के सोच में भी परिवर्तन हुआ है। वह अब समस्त दिशाओं मे अपना परचम लहरा रही है, अत: उन्हे अपने शक्ति की पहचान कर सकारात्मक दिशा की ओर मुड़ना चाहिए, न कि पुरुषों से मुकाबला करना चाहिए। स्त्री

मृदुला सिन्हा जी एक बार मेघालय की यात्रा के दौरान खासी जाति के समाज से मिली वे कहती है कि –"वहा लड़का ही ब्याह कर ससुराल आता है पैतृक और माँ-बाप की अर्जित सम्पत्ति पर बेटी का ही हक़ होता है, बेटियां माँ-बाप के ही घर रहती हैं, समाज के अन्य क्षेत्रो में माँ-बाप को मुखाग्नि देने का प्रथम हकदार बड़ा बेटा होता है, पर खासी जाति में बेटो को मुखाग्नि देने का हक नही है, वहा बेटियों में से जो सबसे छोटी बेटी है, उसे मुखाग्नि देने का हक़ होता है।" सिन्हा जी की बातो से स्पष्ट है कि आज हमारा समाज बेटियों को विशेष महत्व प्रदान कर रहा है, वह प्रत्येक क्षेत्र जहां पुरुष हैं वहां स्त्रियों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया है। आज हम देखते है कि जब भी 10 वीं, 12 वीं के रिजल्ट घोषित होते है तो अखबार के प्रथम पृष्ठ पर लिखा होता है कि –"इस बार भी लड़कियों ने मारी बाजी" स्त्रियों को अपने इस महत्व को समझना चाहिए उन्हे पुरुषों के समकक्ष बनने की जिद्द नहीं पालनी चाहिए। वह तो जननी है, उन्हे अपने अस्तीत्व की पहचान कर, उन्हे नियमित अपने कार्यो को करना चाहिए। स्त्री या पुरुष होने से पहले वह एक मानव है। 'मानव' में ही स्त्री और पुरुष दोनो समाहित हैं। इसलिए उन्हें अपने बात-व्यवहार, रीति-रिवाज, संस्कार आदि के द्वारा अपनी मानवता धर्म की रक्षा करनी चाहिए। उन्हे एक- दूसरे पर दोषारोपण नहीं अपितु एक दूसरे के मनोभावों को समझना चाहिए। हमें यह प्रयास करना चाहिए कि स्त्रियों को विशेष आरक्षण, विशेष सुरक्षा एवं विशेष शक्ति प्रदान करें, जिससे वह अपने महत्व को समझे एवं आने वाली नयी भावी पीढ़ी को भी इससे अवगत कराएं। श्रीमती मृदुला सिन्हा एक विशेष प्रतिभा सम्पन्न लेखिका एवं कुशल राजनीतिज्ञ भी है। उनकी रचनाओं में महिलाओं के लिये सदैव एक रचनात्मक प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला लेखिका के रुप में वे जीवन भर पूज्यनीय बनी रहेंगी। वे भारत की श्रेष्ठ महिलाओं में शामिल है, जिन्होने अपने लेखनी के दम पर स्त्री एवं पुरुषों के सम्बन्ध को एक नयी सोच एवं दिशा प्रदान की है।

सन्दर्भ:

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Mridula_Sinha
2. S. PRIYADARSH (२०१९). भारतीय समाज में नारी की भूमिका. Articles, http://www.essaysinhindi.com/life/women-life/
3. ब्रह्मदत्त (२०१२). मृदुला सिन्हा के कथा_साहित्य में युगबोध. हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी. पेज न०. 1-10. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/128130
4. तोरगल, जैस्मिन बनु हसन (२००९). श्रीमती मृदुला सिन्हा वक्तित्व और कृतित्व. कर्णाटक यूनिवर्सिटी.पेज न०. 1-5. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/100023
5. रमेश चंद शाह (२०१९). भारतीय आधुनिकता की तलाश. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नई दिल्ली पेज न०.75
6. मृदुला सिन्हा (२०१६) मात्र देह नही है औरत, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली पेज न०. 100-256
7. मृदुला सिन्हा (२०१८). औरत अविकसित पुरुष नहीं है. यश पुब्लिकेशन. नयी दिल्ली. पेज न०. 1-227